रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 4

प्रारंभिक कालक्रम, सृष्टि (उत्पत्ति 1:1-2:3)

4. इन वंशावली में शामिल संख्याएँ
कालानुक्रमिक महत्व का आभास दे सकती हैं लेकिन वास्तव में उनका कालक्रम पर कोई प्रभाव नहीं है

हम विलियम हेनरी ग्रीन, बीबी वारफील्ड द्वारा पिछले कक्षा घंटे में उल्लिखित दो लेखों में उनकी चर्चा में विकसित प्रस्तावों को देख रहे थे। अब मैंने आपको चार प्रस्तावों में उनके लेखों का सारांश दिया है, जिनमें से अंतिम था, "इन वंशावली में पेश की गई संख्याएँ कालानुक्रमिक महत्व का आभास दे सकती हैं लेकिन वास्तव में उनका कालक्रम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वे बस जीवन काल और उस उम्र को इंगित करने का काम करते हैं जिसमें बच्चे पैदा करना शुरू हुआ।

5. यदि आप उत्पत्ति 11 के वर्षों को
कालक्रम के प्रयोजन के लिए उपयोग करते हुए कुल करें तो शेम अभी भी इब्राहीम के समय में रह रहा होगा और इब्राहीम के लिए जलप्रलय 292 वर्ष होगा।

तो उस बिंदु से आगे बढ़ते हुए आइए 5 पर चलते हैं। "यदि आप उत्पत्ति 11 में वर्षों को कालक्रम के प्रयोजन के लिए उपयोग करते हुए कुल करते हैं तो शेम अभी भी इब्राहीम के समय में रह रहा होगा, और बाढ़ से इब्राहीम तक 292 होगा साल।" दूसरे शब्दों में, यदि आप कालानुक्रमिक उद्देश्यों के लिए उत्पत्ति 11 वंशावली का उपयोग करते हैं और इस तरह से वंशावली पर काम करते हैं तो यहाँ शेम है। फिर शेम ने एक बेटे को जन्म दिया, यदि आप इन्हें समय के साथ जोड़ते हैं, और यदि आप इसे जोड़ते हैं, तो आपको 292 वर्ष मिलते हैं। अब यदि आप गैर-अंतराल-कालानुक्रम के लिए वंशावली का उपयोग करते हैं जो अक्सर नूह से इब्राहीम तक किया जाता था, तो बाइबिल के रिकॉर्ड से इस तरह से काम

करना बहुत ही असंभव लगता है। हम यहां बाढ़ के बाद शेम से शुरुआत करेंगे, बाढ़ के 2 साल बाद। शेम ने अरफ़क्साड को जन्म दिया जिसकी चर्चा हमने पिछले कक्षा समय में की थी। तो, आप 2 लें और फिर 35, 30, 34, 30, 38 जोड़ें और इसे नीचे कर दें। आपके पास वहां दस लिंक हैं; कुल मिलाकर बात तब सामने आएगी जब 292 वर्ष बाद इब्राहीम का जन्म हुआ। अब, यह 1656 वर्ष इस धारणा पर है कि आपके पीछे आदम से नूह तक उत्पत्ति 5 है। फिर आप इसे वहां से नीचे ले जाएं और जलप्रलय से इब्राहीम तक केवल 292 वर्ष रह जाएंगे।

अब, इब्राहीम के बारे में बाइबिल की सामग्री पर एक मिनट के लिए विचार करें, उसे चाल्डीज़ के उर से, एक बुतपरस्त पृष्ठभूमि से बाहर निकाला गया और हारान जाने के लिए कहा गया और अंततः उसे कनान देश में जाने के लिए कहा गया। बाइबल जहाज़ के अन्य लोगों के अभी भी जीवित होने का कोई संकेत नहीं देती है। इस आधार पर, नूह, इब्राहीम के समय तक जीवित रहा होगा क्योंकि नूह जलप्रलय के बाद 350 वर्षों तक जीवित रहा था और नूह का पुत्र शेम, इब्राहीम से अधिक जीवित रहा होगा। चूँकि अब्राहम की मृत्यु के समय वह 175 वर्ष का था। शेम ने जलप्रलय के दो वर्ष बाद अरफक्साद को जन्म दिया और उसके बाद 500 वर्षों तक जीवित रही। और इनमें से लगभग हर एक व्यक्ति, वास्तव में उनमें से हर एक इब्राहीम के जीवनकाल के दौरान जीवित रहा होगा यदि आप उन सभी कड़ियों का पूरी तरह से उपयोग करते हैं। बाइबल में हमें इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता कि अब्राहम के समय की यही तस्वीर थी।

6. इब्राहीम से 290 वर्ष पहले, जो लगभग 2000 ईसा पूर्व था,
मेसोपोटामिया में बाढ़ का कोई सबूत नहीं है

मैं थोड़ा और आगे जा रहा हूं. अगली समस्या इब्राहीम के समय से 290 वर्ष पहले की है जो लगभग 2000 ईसा पूर्व था; मेसोपोटामिया में जेनेसिस बाढ़ विवरण द्वारा दर्शाए गए पैमाने पर बाढ़ का कोई सबूत नहीं है। हमने मेसोपोटामिया में गाँव की बस्तियों में, शहरों में, सभ्यताओं में, क्रमिक परतों द्वारा खोज की है, जिनका पता लगाया जा सकता है और बाढ़

की रुकावट का कोई संकेत नहीं है। बाढ़ के भंडार हैं लेकिन वे स्थानीय छोटी चीज़ें हैं। एक बार यहां और दूसरी बार कहीं और. किसी प्रकार की सामान्य बाढ़ नहीं जिसने 290 वर्षों के भीतर बल्कि उससे भी पहले पूरी सभ्यता को प्रभावित किया हो। लेकिन मुद्दा यह है कि यदि आप पीछे जाएं तो आपको मेसोपोटामिया में 3000 ईसा पूर्व की काफी अच्छी तरह से स्थापित सभ्यताएं मिलेंगी और आप बिना किसी रुकावट के उस सभ्यता के क्रमिक विकास का पता लगा सकते हैं । मिस्र में भी यही सच है, मिस्र की सभ्यताओं का पता 3000 ईसा पूर्व से भी अधिक समय से लगाया जा सकता है, वास्तव में 4000 ईसा पूर्व या उसके आसपास। फिर भी बाढ़ रुकने का कोई संकेत नहीं है. यदि आप उस बाढ़ को उस तरह के ऐतिहासिक काल में रखना चाहते हैं तो आपके पास समय नहीं है। नूह और इब्राहीम के बीच केवल 292 वर्ष, आपके पास 2300 ईसा पूर्व के बारे में कुछ भी नहीं है

वारफ़ील्ड का कहना है, "दो वंशावली के पृष्ठ 247 लेकिन विशेष रूप से यह अंतिम वंशावली दस के समूहों में एक सममित व्यवस्था है, दोनों दस लिंक उत्पत्ति 5 और उत्पत्ति 11 उनके संपीड़न का संकेत है। और हम सब जानते हैं कि सृष्टि और इब्राहीम के जन्म के बीच के अंतराल को मापने के लिए बीस पीढ़ियों और 2000 वर्षों के बजाय, 200 पीढ़ियाँ और 20,000 वर्ष या यहाँ तक कि 2,000 पीढ़ियाँ और 200,000 वर्षों जैसा कुछ हस्तक्षेप हो सकता है। अब वह कोई तिथि निर्धारित करने का प्रयास नहीं कर रहा है, वास्तव में वारफ़ील्ड वास्तव में सोचता है कि इनमें से कुछ चीजों की प्राचीनता कुछ अन्य लोगों की तुलना में कम पुरानी है। लेकिन वह जो स्थापित कर रहा है वह यह सिद्धांत है कि आप इसे बाइबिल की जानकारी से निर्धारित नहीं कर सकते। आप अच्छी तरह से निर्दिष्ट नहीं कर सकते कि यह इस अवस्था में था या यह केवल इस सीमा तक जा सकता था और उस सीमा तक नहीं जा सकता था। जिस सामग्री के साथ आप काम कर रहे हैं उसकी प्रकृति के कारण यह सब अटकलें थीं। बाइबल हमें सृष्टि की घटनाओं या बाढ़ पर तारीखें तय करने के लिए डेटा नहीं देती है। वे दो बिंदु हैं, जो महत्वपूर्ण बिंदु हैं।

वॉरफील्ड का निष्कर्ष - धर्मग्रंथ डेटा हमें सृजन से लेकर जलप्रलय तक के समय का अनुमान लगाने में मार्गदर्शन के बिना छोड़ देता है।

तो वह कहते हैं, "एक शब्द में कहें तो, धर्मग्रंथों का डेटा हमें दुनिया के निर्माण और जलप्रलय के बीच और जलप्रलय और इब्राहीम के जीवन के बीच के समय का अनुमान लगाने में मार्गदर्शन के बिना छोड़ देगा। जहां तक धर्मग्रंथों के दावों का सवाल है, हम मान सकते हैं कि इन घटनाओं के बीच किसी भी लम्बाई का हस्तक्षेप हो सकता है, जो अन्यथा उचित हो सकता है।" यह एक महत्वपूर्ण कथन है, और मुझे लगता है कि यही मुद्दे का मूल है। जहां तक पवित्रशास्त्र का सवाल है, हम इन घटनाओं के बीच किसी भी लम्बाई के हस्तक्षेप का अनुमान लगा सकते हैं, जो अन्यथा उचित हो सकता है । दूसरे शब्दों में, यदि आप सृजन के लिए एक तिथि स्थापित करना चाहते हैं, यदि आप बाढ़ के लिए एक तिथि स्थापित करना चाहते हैं, तो आपको बाइबिल के डेटा के अलावा अन्य डेटा के साथ ऐसा करना होगा। अन्य डेटा चाहे जो भी सुझाव दे, वही साक्ष्य है जिस पर आपको आगे बढ़ना है। यह कोई धार्मिक मुद्दा नहीं है, यह बाइबिल की व्याख्या की समस्या नहीं है, *क्योंकि* बाइबिल की सामग्री इसका समाधान नहीं करती है। यह केवल तभी है जब आप इस वंशावली सामग्री को कालानुक्रमिक उद्देश्य के लिए बाध्य करने जा रहे हैं, तभी आपके पास इस मुद्दे को संबोधित करने वाला पवित्रशास्त्र हो सकता है। चूँकि ऐसा नहीं होता है, तो आपको समस्या को बाइबिल से परे डेटा के साथ सुलझाना होगा, चाहे वह कुछ भी हो।

निःसंदेह, मुझे यकीन है कि आप जानते हैं कि जब आप इस प्रश्न पर विचार करते हैं तो आपके सामने युवा पृथ्वी के लोग और पुरानी पृथ्वी के लोग आते हैं, जो मनुष्य की उत्पत्ति की तारीख के बारे में इतना नहीं बोलता है, बल्कि सृजन की तारीख के बारे में बताता है। पृथ्वी के निर्माण के समय की तुलना में मनुष्य किस समय पृथ्वी पर प्रकट हुआ, यह एक बिल्कुल अलग प्रश्न है। लेकिन युवा पृथ्वी के लोग और पुरानी पृथ्वी के लोग बहस करते हैं और बाढ़ भूविज्ञान बनाम पृथ्वी के भूवैज्ञानिक स्तर की व्याख्या करने के अधिक पारंपरिक प्रयासों और इसमें किस प्रकार की समय-सीमाएँ शामिल हैं, में उलझ जाते हैं। मुझे लगता है

कि यह बहस निश्चित रूप से वैध है लेकिन इसे अपने गुणों के आधार पर आगे बढ़ाया जाना चाहिए । यह कोई धार्मिक प्रश्न या व्याख्यात्मक प्रश्न नहीं है। हम थोड़ी देर बाद उस पर वापस आएंगे। इस बिंदु पर मुझे लगता है कि वारफील्ड और ग्रीन मुझसे जो कह रहे हैं वह महत्वपूर्ण है। निर्माण की तारीख और बाढ़ की तारीख के ये प्रश्न धार्मिक मुद्दे नहीं हैं। उन्हें बाइबिल के आंकड़ों से तय नहीं किया जा सकता। इसलिए, यह एक खुला प्रश्न है. क्योंकि यह एक खुला प्रश्न है, मुझे लगता है कि हमें सृजन की तारीखों या बाढ़ की तारीखों के बारे में किसी के विचार को रूढ़िवादिता या बाइबिल की वफादारी की किसी तरह की परीक्षा बनाने के बारे में बहुत सावधान रहने की जरूरत है। धर्मग्रंथ इसे संबोधित नहीं करता; इसलिए, यह कोई धार्मिक प्रश्न नहीं है।

7. सर्वव्यापी बाढ़?

मैं यह कहना चाहता हूं कि उत्पत्ति 6 और 9 एक वैश्विक बाढ़ प्रस्तुत करता है, लेकिन मैं यह निष्कर्ष निकालने के लिए इच्छुक नहीं हूं कि पूरी पृथ्वी बाढ़ में डूब गई थी क्योंकि वहां आप इस बहस में पड़ जाते हैं कि "सभी" शब्द का क्या अर्थ है। क्या यह "सब कुछ" संदर्भ के एक सीमित दायरे में है? हम कुछ ग्रंथों को देखेंगे जो इसका अनुसरण करेंगे क्योंकि ऐसे अन्य स्थान हैं जो कहते हैं कि जब यूसुफ मिस्र को भोजन दे रहा था, तो यह कहता है कि "पृथ्वी के सभी राष्ट्र उसके पास भोजन के लिए आए थे।" यह उसी प्रकार की शब्दावली है जिसका प्रयोग बाढ़ के साथ किया जाता है। अब क्या हम कहेंगे कि जोसेफ से खाना खरीदने के लिए चीन से लोग आ रहे थे? मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि यह पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र के सभी देश हैं। इसलिए मुझे लगता है कि आपको सावधान रहना होगा कि आप वैश्विक बाढ़ के लिए किस आधार पर तर्क दे रहे हैं। हम उस पर बाद में चर्चा करेंगे.

यदि वैश्विक बाढ़ आई थी, तो मुझे लगता है कि अगला प्रश्न भूवैज्ञानिक रूप से यह है कि स्तर में इसके सबूत कहां हैं? मैं आपको यह नहीं बता सकता. मैंने व्हिटकॉम्ब और

मॉरिस जैसे बाढ़ भूवैज्ञानिकों के अलावा किसी को भी इसके लिए भूवैज्ञानिक साक्ष्य की ओर इशारा करते नहीं देखा है, जो इसके सबसे लोकप्रिय अधिवक्ताओं का दावा करते हैं जो कहते हैं कि सभी स्तरों के साथ पृथ्वी की पूरी परत को एक के द्वारा समझाया जाना चाहिए। वर्ष बाढ़. फिर सवाल है कि क्या यह एक ठोस तर्क है। फिर से यह एक वैज्ञानिक मामला है न कि बाइबिल का। उत्पत्ति 6-9 में ऐसा कुछ भी नहीं है जो बाढ़ भूविज्ञान के बारे में बात करता हो। तो फिर, जब आप तर्क देते हैं कि यह एक धार्मिक मुद्दा नहीं है और यह मुद्दा भूवैज्ञानिकों के बीच एक तर्क है और वे स्तरों की व्याख्या कैसे करते हैं, उन्हें कैसे जमा किया गया था, कौन से सबूत उस निष्कर्ष का समर्थन करते हैं, और कोई उस सबूत से क्या निष्कर्ष निकाल सकता है; यह प्रश्न का विषय है। हम उस पर वापस आएंगे, मैं उस पर विस्तार से चर्चा नहीं करने जा रहा हूं क्योंकि मैं भूविज्ञानी नहीं हूं। वहां आप खुद को विशेषज्ञों की दया पर निर्भर पाते हैं। लेकिन मैंने उसमें से कुछ सामग्री पढ़ी है और मुझे लगता है कि बाढ़ भूविज्ञान में कमजोरियां हैं और यह वास्तव में कारगर नहीं है। सबूत कहां है? मैं यह कह रहा हूं कि शायद यह बहुत पीछे चला गया है और हो सकता है कि समय के साथ क्षरण और विभिन्न कारकों के कारण सबूत खो गए हों जो हमारे पास नहीं हैं। हालाँकि हम तबके की ओर इशारा करके यह नहीं कह सकते कि यहाँ बाढ़ है; इसका मतलब यह नहीं है, कम से कम मेरे लिए, कि बाढ़ नहीं थी। मुझे लगता है कि यह धर्मग्रंथ के आधार पर था।

मैं वारफ़ील्ड के इस अंतिम कथन के साथ चलूँगा "हम मान सकते हैं कि किसी भी लम्बाई में हस्तक्षेप किया जा सकता है जो अन्यथा उचित प्रतीत हो सकता है।" इसलिए उस मुद्दे को वैज्ञानिक रूप से संबोधित करने के लिए जो भी सबूत मौजूद हैं, वे तब तक वैध हैं जब तक वह अच्छे आधार पर टिके हुए हैं। इसलिए, बाइबल इस मुद्दे को संबोधित नहीं करती है और आप जो भी निष्कर्ष निकालेंगे वह बाइबिल से इतर साक्ष्यों पर आधारित होगा। आप उस साक्ष्य को वहां ले जा सकते हैं जहां यह आपको ले जाए।

8. क्या पुरानी पृथ्वी का दृष्टिकोण विकासवादी सिद्धांत के प्रति खुला है? **विद्यार्थी टिप्पणी** : क्या यह विकासवादी सिद्धांत या उत्पत्ति के लिए खुलना नहीं है?

वन्नॉय की प्रतिक्रिया : मुझे ऐसा नहीं लगता, मुझे लगता है कि अक्सर यह धारणा रही है कि यदि आप लंबे समय तक अनुमति देते हैं तो ऐसा करने का कारण विकासवादियों को समायोजित करना है। मुझे लगता है कि कुछ लोग बात को उलट देते हैं और कहते हैं कि विकासवादी सिद्धांत को विफल साबित करने में ज्यादा समय नहीं लगा। लेकिन, दूसरी ओर, आप यह नहीं कह सकते, सिर्फ इसलिए कि इसमें लंबी अवधि है इसका मतलब यह नहीं है कि आपको विकास को स्वीकार करना चाहिए। मैं विकासवाद को स्वीकार नहीं करता और कई अन्य लोग भी हैं जो अभी तक नहीं मानते हैं जो पृथ्वी पर मनुष्य की उपस्थिति के लिए लंबे समय को स्वीकार करते हैं और फिर भी विकासवादी सिद्धांत को अस्वीकार करते हैं।

छात्र टिप्पणी : एक तरह से, आप उन्हें तर्क का आधार दे रहे हैं।

वन्नॉय की प्रतिक्रिया : वह सिर्फ एक कारक है: समय। लेकिन यह किसी भी तरह से एकमात्र कारक नहीं है। ऐसी कई अन्य चीजें हैं जिन पर एक साथ काम करना होगा।

विद्यार्थी टिप्पणी : क्या यह वंशावली अद्वितीय है, इससे मेरा तात्पर्य इस काल की अन्य वंशावली से इसकी तुलना कैसे की जाती है? क्या पाठकों ने इसे अंतराल समझा होगा?

9. वन्नॉय की प्रतिक्रिया: धर्मग्रंथ से अधिक या कम न कहें

वन्नॉय की प्रतिक्रिया : मुझे लगता है कि आप यह कह सकते हैं, देखिए जब तक वैज्ञानिक खोज ने पृथ्वी में परतों जैसी चीजों की जांच करना और समय के बारे में विचार प्राप्त करना शुरू नहीं किया और निश्चित रूप से, विकासवादी सिद्धांत सामने नहीं आया, जब तक कि वे सभी प्रश्न नहीं उठे, तब तक किसी ने भी वास्तव में इतना ध्यान नहीं दिया। इन चीजों के लिए. दूसरे शब्दों में, वैज्ञानिक डेटा और मैं विकासवादी को शामिल नहीं कर रहा हूं, लेकिन वैज्ञानिक डेटा ने लोगों को बाइबिल सामग्री को करीब से देखने और उस पर

अधिक विचार करने के लिए मजबूर किया है और मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से इस समझ में आने का एक कारक रहा है कि ऐसा नहीं है इसका मतलब अनिवार्य रूप से एक गैर-अंतराल-कालक्रम है। आप नहीं चाहते कि विज्ञान अनुचित तरीके से धर्मग्रंथ पर शासन करे, लेकिन दूसरी ओर, वैज्ञानिक विकास धर्मग्रंथ पर करीब से नज़र डालने और यह देखने के लिए एक प्रेरणा हो सकता है कि यह वास्तव में क्या कहता है। जब आप पवित्रशास्त्र को देखते हैं तो आपको सावधान रहना होगा कि इसमें जो वास्तव में कहा गया है उससे अधिक या कम न कहें। आपको इसमें ऐसी बातें नहीं पढ़नी चाहिए और ऐसी धारणाएँ नहीं बनानी चाहिए जो अमान्य हों।

आइए देखें कि यह वास्तव में क्या कहता है। और जब आप प्रयुक्त शब्दावली को देखते हैं, "बेटा," "भालू" और "जन्म देना" और आप अन्य वंशावली को देखते हैं और बाइबिल की वंशावली के सामान्य चरित्र को देखते हैं, तो आप देखते हैं कि इसे वंश की रेखा का पता लगाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसलिए, सामान्य चरित्र संपीड़न है न कि पूर्ण या संपूर्ण सूची, तो मुझे लगता है कि यह एक स्वाभाविक निष्कर्ष है। हमें इन वंशावलियों को केवल दस कड़ियों में बाँटने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में मुझे लगता है कि बेबीलोन में आपके पास राजाओं की सूची है जो इससे बहुत बाद की होगी। लेकिन जहां तक मेरी जानकारी है, इस समयावधि में वंश की पंक्ति में रुचि विशिष्ट रूप से बाइबिल पर आधारित है।

बी. कुछ अतिरिक्त विचार: 3000-5000 ईसा पूर्व की मिस्र और मेसोपोटामिया संस्कृतियाँ

बी. आपकी शीट पर है, "कुछ अतिरिक्त विचार।" इनमें से कुछ पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। लेकिन सबसे पहले, केवल तर्क के लिए, यदि आप सृजन की पारंपरिक तारीख लेते हैं जो कालानुक्रमिक उद्देश्यों के लिए इन वंशावली का उपयोग करने से लगभग 4000 ईसा पूर्व निकलती है तो इसमें एक विरोधाभास है कि हम जानते हैं कि 3000 ईसा पूर्व मिस्र और मेसोपोटामिया में विकसित सभ्यताएँ थीं। ईसा पूर्व इन सभ्यताओं से, 3000 में,

आप जानते हैं कि बाबेल की मीनार पर बाढ़ और भाषा का भ्रम दोनों उससे पहले हुआ होगा क्योंकि उन मेसोपोटामिया संस्कृतियों या मिस्र की संस्कृतियों में भाषा की कोई एकरूपता नहीं थी। तो वह सब जो बाढ़ के बाद होना था और बाबेल की मीनार पर भाषाओं का भ्रम उससे पहले होना था। फिर यदि आप उत्पत्ति 5 का एक गैर-अंतराल कालक्रम और चार्ट लेते हैं, वही चीज़ जो हमने एक मिनट पहले उत्पत्ति 11 के साथ किया था, एडम से नूह तक और आप उसे नीचे, 0 पर सृष्टि तक ले जाते हैं, तो आप आने वाले हैं 1656 में बाढ़ तक। इसलिए यदि आपके यहाँ 3000 वर्ष हैं, और 1656 में आप पहले से ही बाढ़ में हैं और वर्तमान 4656 है, तो आपके पास पहले से ही पर्याप्त समय नहीं है। मैंने यथासंभव रूढ़िवादी आंकड़ों का उपयोग किया है। तो ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे आप इसे फिट कर सकें। अब क्या आप यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पवित्रशास्त्र और ऐतिहासिक ज्ञान के बीच कोई विरोधाभास है? मुझे ऐसा नहीं लगता। मेसोपोटामिया में 5000 ईसा पूर्व में गाँव की बस्तियाँ थीं और जेरिको में 8000 ईसा पूर्व की तारीखें हैं। बीच में बाढ़ का कोई सबूत नहीं है। निष्कर्ष क्या है, ऐसा नहीं है कि विज्ञान और धर्मग्रंथ के बीच कोई विरोध है, बल्कि यह है कि इन वंशावलियों का उपयोग करने का यह उचित तरीका नहीं है। उनका उद्देश्य कालक्रम के रूप में कार्य करना नहीं है।

1. बाइबल और भूवैज्ञानिक विज्ञान में सामंजस्य स्थापित करने के प्रारंभिक अपर्याप्त प्रयास

अब 1800 के दशक के उत्तरार्ध में लोगों को शुरू में इस समस्या का सामना करना पड़ा, कुछ दिलचस्प तरीकों से, यह पुस्तक, यह एक बहुत ही ईसाई विरोधी पुस्तक है जिसे द *हिस्ट्री ऑफ द वारफेयर ऑफ साइंस विद थियोलॉजी कहा जाता है और* एंड्रयू डिक्सन व्हाइट द्वारा *ईसाईजगत* / वह यहां उन सभी तरीकों का सारांश प्रस्तुत करता है जिनमें विज्ञान और बाइबिल के बीच टकराव हुआ था और निश्चित रूप से, वह एक वैज्ञानिक के रूप में आश्वस्त है जो सोचता है कि उसने बाइबिल को अविश्वसनीय साबित कर दिया है। लेकिन उन्होंने कालक्रम की इस बात की चर्चा अपनी पुस्तक, *द हिस्ट्री ऑफ द वॉरफेयर*

ऑफ साइंस विद थियोलॉजी एंड क्रिस्चेंडम के पृष्ठ 201 पर की है। वह कहते हैं, "यह स्पष्ट हो गया कि धर्मग्रंथ कालक्रम की जो भी प्रणाली अपनाई गई, मिस्र नूह की बाढ़ से पहले की अवधि में एक समृद्ध सभ्यता का बीज था, और ऐसी किसी भी बाढ़ ने इसे बाधित नहीं किया था। यह जल्द ही स्पष्ट हो गया कि मिस्र की सभ्यता मनुष्य के निर्माण के लिए निर्धारित समय से पहले ही शुरू हो गई थी, यहाँ तक कि सबसे उदार पवित्र कालक्रम विज्ञानियों के अनुसार भी।" देखिए कि कालक्रम के लिए इन वंशावली का उपयोग करते हुए पुरानी तरह की कालक्रम प्रणाली पर काम किया जा रहा था और लोगों को इसके बारे में पता चलना शुरू हो गया था।

खैर, उन्होंने इसके साथ क्या किया? वह एक दिलचस्प उदाहरण देते हैं. पृष्ठ 232 पर वे कहते हैं, कि "मिस्टर साउथहॉल ने 1875 में प्रकाशित अपनी पुस्तक, जिसका शीर्षक द *रीसेंट ओरिजिन ऑफ द वर्ल्ड है*, में सीखने में बड़ी सरलता दिखाते हुए, मिस्र की सभ्यता की प्रारंभिक तिथि द्वारा प्रस्तुत कठिनाइयों से जूझते हैं। उनके तर्क का मुख्य बिंदु पुरातत्व संबंधी खोजों को अच्छी तरह से समझने से पहले एक प्रतिष्ठित मिस्रविज्ञानी द्वारा दिया गया यह कथन है कि 'मिस्र में एक असभ्य पाषाण युग, एक बहु पाषाण युग, एक कांस्य युग, एक लौह युग के विचार का अभाव है, जिसका तिरस्कार किया जा सकता है। .' श्री साउथहॉल की पद्धति काफी हद तक वंशावली में दिवंगत श्री गोसा की पद्धति जैसी थी। इस कार्य के पाठकों के रूप में श्री गोसा ने उत्पत्ति के कथित हित में यह आग्रह करने के लिए बाध्य महसूस किया था कि पुरुषों की आत्माओं की सुरक्षा इस विश्वास में पाई जा सकती है कि 6000 साल पहले सर्वशक्तिमान ने कुछ गूढ़ उद्देश्य के लिए अचानक नियाग्रा को उस स्थान के बहुत करीब डाल दिया था जहां यह अब बरस रहा है, विभिन्न स्तरों को बिछाया और दफनाया, पुडिंग के माध्यम से प्लम की तरह उनमें जीवाश्मों को छिड़का, चट्टानों पर हिमानी झाड़ू को खरोंचा, दुनिया के सभी हिस्सों में सूक्ष्म और चालाक, छोटी और महान चीजों की एक विशाल भीड़ की। आधुनिक समय के भूवैज्ञानिकों को इस विश्वास में भ्रमित करने की आवश्यकता है कि ये सभी चीजें लंबे महाकाव्यों के माध्यम से स्थिर प्रक्रिया का

परिणाम थीं। दूसरे शब्दों में, उम्र के आभास के साथ रचना। भूवैज्ञानिक समस्या का भूवैज्ञानिक समाधान था। व्हाइट कहते हैं, "इसी तरह की योजना पर, श्री साउथहॉल ने समस्या के अंतिम समाधान के रूप में अपनी पुस्तक की शुरुआत में ही प्रस्तावित किया था कि मिस्र की घोषणा, मैना के समय में, अपने नस्लवादी वर्गों और संस्थानों के साथ उच्च सभ्यता में थी। , व्यवस्थाएं, भाषा और स्मारक, सभी इतिहास के एक विशाल काल के माध्यम से विकास का संकेत देते हुए एक अचानक रचना थी, जो पूरी तरह से निर्माता के हाथों से बनाई गई थी, अपने शब्दों में कहें तो, 'मिस्रवासियों के पास कोई पाषाण युग नहीं था, वे सभ्य पैदा हुए थे। "

तो यह सामंजस्य बिठाने की कोशिश के शुरुआती प्रयास का सिर्फ एक उदाहरण है। मुझे नहीं लगता कि यह बहुत आश्वस्त करने वाला है। सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि आप इसके लिए मजबूर नहीं हैं। आपको उस तरह का काम करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह उस उद्देश्य की ग़लतफ़हमी पर आधारित है कि उत्पत्ति 5 और उत्पत्ति 11 में यह सामग्री पवित्रशास्त्र में क्यों रखी गई थी। मुझे लगता है कि वारफील्ड और विलियम हेनरी ग्रीन का यह कहना कि यह कोई धार्मिक मुद्दा नहीं है और धर्मग्रंथ हमें यह नहीं बताता है, ने इस तरह के सभी प्रकार के कुतर्कों को खत्म कर दिया है और न केवल, जहां तक मेरा सवाल है, सभ्यता के मुद्दे के संबंध में भी समय, लेकिन भूवैज्ञानिक स्तर के संबंध में भी।

2. राष्ट्र तालिका - जनरल 10 टी हैट का एक अतिरिक्त विचार, और दूसरा जो इससे बहुत निकटता से संबंधित है। उत्पत्ति 10 में, आपके पास राष्ट्रों की एक तालिका है, जो नूह के तीन पुत्रों: शेम, हाम और येपेत के लोगों के भौगोलिक वितरण का पता लगाती है। अब दिलचस्प बात यह है कि उत्पत्ति 10 को बाढ़ के अंत और बाबेल की मीनार से पहले रखा गया है, भले ही उत्पत्ति 10 में जो वर्णित है उसमें बाबेल की मीनार के बाद की स्थितियों से संबंधित सामग्री है। दूसरे शब्दों में, ये सभी राष्ट्र, भाषाएँ और भाषाएँ बाबेल से पहले अस्तित्व में नहीं थीं, लेकिन अध्याय 11 से पहले इसे शामिल करने की बात बस इतनी है कि अध्याय 9 के

अंत में, आपके पास शेम, हाम और येपेत का संदर्भ है, नूह के तीन बेटे और यहां यह पता लगाया जाएगा कि नूह के तीन बेटों का परिणाम क्या था और शेम, हाम और येपेत के वंशजों के रूप में अलग-अलग लोग अलग-अलग जगहों पर कैसे बसे थे। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 10:21 और उसके बाद देखें। "शेम के पुत्र पैदा हुए, जिसका बड़ा भाई येपेत था, शेम एबेर के सभी पुत्रों का पूर्वज था। शेम के पुत्र: एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और अराम। अराम के पुत्र: ऊज़ , हूल, गेतेर और मेशेक। अर्पक्षद शेलह का पिता था और शेलह एबेर का पिता था।" शेम से अश्शूर और एलाम जैसे लोग आते हैं, उदाहरण के लिए, ये ऐसे लोगों के समूह थे जो इब्राहीम के समय से बहुत पहले रहते थे। उनकी अपनी भाषाएँ थीं, वे अलग-अलग भाषाओं वाले लोगों और राष्ट्रों के रूप में विकसित हुए थे।

पुनः, यदि आप उत्पत्ति 11 के इस गैर-अंतराल-कालानुक्रम को लेते हैं, तो आपके पास बाढ़ की समाप्ति और इब्राहीम के जन्म के बीच केवल 292 वर्ष हैं। ये सभी राष्ट्र, लोग और भाषाएँ केवल 292 वर्षों में कैसे विकसित हो गए? यह वहां फिट नहीं बैठता. एलामाइट 2000 ईसा पूर्व से बहुत पहले एक मजबूत लोग थे, जैसे कि अश्शूर के लोग थे।

3. बाइबिल में वंशावली में वर्षों की संख्या को संयोजित नहीं किया गया है।

तीसरा विचार: बाइबल वंशावली में वर्षों की संख्या को संयोजित नहीं करती है। दूसरे शब्दों में, यह शेम से इब्राहीम तक 292 वर्ष देने का योग नहीं है। यह ऐसा नहीं करता. यह आपको कुल नहीं देता. मुझे ऐसा लगता है कि यदि उद्देश्य कालक्रम होता तो आपको कुल मिल जाता। जनगणना में, पिछली कक्षा के घंटों में संख्याओं का जो आंकड़ा मुझे नहीं मिला, उससे आपको पता चलता है कि प्रत्येक जनजाति में कितने पुरुष 20 वर्ष या उससे अधिक उम्र के हैं और अंत में आपको कुल मिलता है। यह उन्हें पूरा करता है. लेकिन यहां आपके पास वह नहीं है. तो मुझे लगता है कि इससे यह भी पता चलता है कि वह इरादा नहीं था।

4. मैथ्यू 1:2-17 ईसा मसीह की वंशावली मैथ्यू 1:2-17 में एक और समस्या है मेरा

मानना है कि आपको वह मूल संक्षिप्त शीर्षक मिल गया है, "यीशु मसीह, दाऊद का पुत्र, इब्राहीम का पुत्र" 42 कड़ियों में विभाजित है 14 प्रत्येक की तीन इकाइयाँ। तो यह योजनाबद्ध है. यदि आप तुलना करते हैं, उदाहरण के लिए, श्लोक 8. "आसा यहोशापात का पिता था, यहोशापात यहोराम का पिता था, यहोराम उज्जिय्याह का पिता था," यदि आप श्लोक 8 की तुलना पुराने नियम से करते हैं तो आप देखते हैं कि तीन राजा पार हो गए हैं और यहोराम है उज्जिय्याह का पिता कहा जाता है । उज्जिय्याह वास्तव में यहोराम का परपोता था । तो फिर से "उत्पन्न" के उपयोग का अर्थ "पूर्वज बन गया" होना चाहिए। लेकिन फिर यह एक और निहितार्थ जोड़ता है क्योंकि यदि आप पद 17 पर जाते हैं, तो आप पढ़ते हैं "इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक कुल मिलाकर 14 पीढ़ियाँ थीं। और 14 दाऊद से बाबुल की बन्धुवाई तक, और 14 बन्धुवाई से मसीह तक।" मुझे नहीं लगता कि वहाँ मौजूद "सभी" का मतलब यह है कि ये "सभी" वे पीढ़ियाँ हैं जो जीवित थीं। इसका मतलब मैथ्यू द्वारा इस योजनाबद्ध व्यवस्था में गिनाए गए सभी से होना चाहिए। मुझे नहीं पता कि आप इसके साथ और क्या कर सकते हैं, क्योंकि आप श्लोक 8 की तुलना 2 राजा 8:24 में पुराने नियम से स्पष्ट रूप से कर सकते हैं। वहां आप पाते हैं कि 2 राजा 8:24 में यहोराम का पुत्र उज्जियाह नहीं था, बल्कि अहज्याह था, और योआश अहज्याह का पुत्र था और अम्माज्याह योआश का पुत्र था और उज्जियाह अम्माज्याह के पुत्र के रूप में आता है।

तृतीय. इब्राहीम एल से पहले की दुनिया और रोमन अंक III पर चलते हैं। "अब्राहम से पहले की दुनिया। उत्पत्ति 1 से अध्याय 11 तक का प्राचीन इतिहास। उत्पत्ति 1 से 11 के बारे में आम तौर पर बस कुछ टिप्पणियाँ। उत्पत्ति 1 से 11 में हम अन्यथा दर्ज इतिहास से पहले की घटनाओं से चिंतित हैं। जब आप उत्पत्ति 12 पर पहुँचते हैं, तो आप इब्राहीम के समय में होते हैं। इब्राहीम ऐसे समय में रहता है जब बाइबिल के इतिहास को धर्मनिरपेक्ष इतिहास के साथ सहसंबद्ध किया जा सकता है। वह ऐसे समय में रहता है जहां हमारे पास बाइबिल के अलावा अन्य स्रोत भी हैं - ऐतिहासिक स्रोत। लेकिन उत्पत्ति 1 से 11 में, हम उन चीज़ों से

निपट रहे हैं जो बाइबल के बाहर, अन्यथा दर्ज इतिहास से पहले के समय में घटित हुई थीं। साथ ही, हम उत्पत्ति 1 से 11 में मानव अस्तित्व के कुछ सबसे बुनियादी प्रश्नों से निपट रहे थे। विशेष रूप से अध्याय 1 से 3 में, सृजन और पतन के साथ, और फिर अध्याय 11 में विभिन्न भाषाओं के विकास और लोगों के वितरण के साथ भी। इसलिए मुझे लगता है कि हम यह कह सकते हैं कि विशेष रूप से उत्पत्ति 1 से 3 के साथ, लेकिन आम तौर पर उत्पत्ति 1 से 11 के साथ भी हमारे पास संपूर्ण बाइबिल में कुछ सबसे महत्वपूर्ण अध्याय हैं।

ए. उत्पत्ति 1:1-2:3 में ब्रह्मांड का निर्माण

तो, आइए इसे देखना शुरू करें और हम यहां बाइबिल के पाठ से निपटना शुरू करेंगे। ए. है "उत्पत्ति 1:1 से 2:3 में ब्रह्मांड की रचना।" सामग्री 1:1 से 2:3 के उस विशेष विभाजन पर टिप्पणी करने के लिए मैंने अध्याय 1 के अंत में विराम नहीं दिया। मैंने इसे अध्याय 2 से तीसरे श्लोक तक ले लिया। जैसा कि आप जानते हैं, मुझे यकीन है, अध्याय और पद्य विभाजन पाठ के लिए कुछ मौलिक नहीं हैं, उन्हें बाद में डाला गया है और कई मामलों में आप पारंपरिक रूप से अनुसरण किए जाने वाले ब्रेकिंग पॉइंट की तुलना में बेहतर ब्रेकिंग पॉइंट पा सकते हैं। उत्पत्ति के पहले खंड के लिए एक बेहतर विभाजन स्थान 2:3 है, इसका कारण यह है कि उत्पत्ति का श्लोक 4 एक वाक्यांश से शुरू होता है जो वह वाक्यांश बन जाता है जो शेष पुस्तक की संरचना करता है। किंग जेम्स संस्करण में वह वाक्यांश "ये की पीढ़ियाँ हैं" है।

जनरल 2:4-उत्पत्ति 50 की टोलेडोथ 10-गुना संरचना, एनआईवी में जिसे मैं देख रहा हूं, यह कहता है, "यह आकाश और पृथ्वी का विवरण है।" जहां तक उत्पत्ति की पुस्तक की संरचना का सवाल है तो आपके पास 1:1 से 2:3 तक की रचना है और आप कह सकते हैं कि यह पुस्तक का पहला खंड है। पुस्तक का दूसरा खंड पुस्तक के अंत तक 2:4 का होगा और इसे 10 खंडों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक का परिचय इस वाक्यांश के साथ किया जाता है "ये की पीढ़ियाँ हैं।" उन खंडों में से पहला उत्पत्ति 2:4 से शुरू होता है "ये

स्वर्ग और पृथ्वी की पीढ़ियाँ हैं।" दूसरा खंड 5:1 से शुरू होता है "ये आदम की पीढ़ियाँ हैं" और 6:9 तीसरा है, "ये नूह की पीढ़ियाँ हैं।" अब एनआईवी का कहना है, "यह नूह का विवरण है।" हम उस वाक्यांश पर बाद में चर्चा करेंगे. लेकिन यहाँ मेरी बात यह है कि संरचनात्मक रूप से उत्पत्ति की पुस्तक पुस्तक के माध्यम से नियमित रूप से उस वाक्यांश द्वारा पेश की गई सामग्री के उन ब्लॉकों में आती है। इसलिए बेहतर होगा कि आप जिस वाक्यांश को प्रत्येक अनुभाग में विभाजित कर रहे हैं उसे बनाएं। न केवल यह खंड का विभाजन बिंदु है, बल्कि यह पुस्तक के बाकी हिस्से से बहुत महत्व के परिचयात्मक खंड, रचना से अलग है। तो आपके पास उत्पत्ति 1:1 से 2:3 तक आकाश और पृथ्वी की रचना है और फिर आपके पास पीढ़ियाँ हैं जिन्हें आप कह सकते हैं कि पीढ़ियों के 10 खंडों में पुस्तक के 2:4 से अंत तक इसका पालन करें।

1. भगवान के बारे में सामान्य शिक्षण 1. ए के तहत "भगवान के बारे में सामान्य शिक्षण" है, आप ध्यान दें कि मैं यहां 1., 2., और 3 में क्या करने जा रहा हूं, बस आपको "भगवान के बारे में सामान्य शिक्षण" का सारांश देना है। " "ब्रह्मांड के बारे में सामान्य शिक्षा," और फिर, "मानव जाति के बारे में सामान्य शिक्षा" जो उत्पत्ति के पहले अध्याय में पाई जाती है। मैं इस पर बहुत अधिक विस्तार से ध्यान नहीं देने जा रहा हूं, लेकिन बस इन क्षेत्रों में कुछ सामान्य सिद्धांत बताऊंगा जैसा कि हम उत्पत्ति 1 में पाते हैं। मैं ऐसा करने से पहले कह सकता हूं, वेलहाउज़ेन स्कूल और जेईडीपी विश्लेषण उत्पत्ति 1 को पी दस्तावेज़ में निर्दिष्ट करते हैं , जो नवीनतम सामग्री है क्योंकि इसमें उत्पत्ति अध्याय 1 में एक बहुत ही परिष्कृत ईश्वर की अवधारणा है जो पहले नहीं हो सकती थी लेकिन देर हो चुकी थी। पी सामग्री क्रिटिकल स्कूल के अनुसार निर्वासन में या निर्वासन के बाद भी लिखी जाती है। उत्पत्ति 2 को जे को सौंपा गया है, जो कि सबसे प्रारंभिक होगा ताकि आप परिष्कृत से सबसे आदिम सामग्री की ओर बढ़ें। मेरे ऐसा कहने का कारण यह है कि जब हम अध्याय 2 पर पहुँचेंगे तो मैं उस मुद्दे पर चर्चा करना चाहता हूँ। मैंने अभी इस बिंदु पर इसका उल्लेख किया है।

एक। ईश्वर के अस्तित्व को "ईश्वर के बारे में सामान्य शिक्षा" के अंतर्गत बिल्कुल सही माना गया है। एक। "ईश्वर का अस्तित्व मान लिया गया है।" यह अपने आप में दिलचस्प है, यदि आप बाइबिल सामग्री की तुलना बाइबिल से परे पौराणिक कथाओं से करते हैं, तो आप बाइबिल से परे पौराणिक कथाओं में जो पाते हैं वह ऐसी कहानियां हैं जो बताती हैं कि देवता स्वयं कैसे अस्तित्व में आए। जिस कहानी की तुलना अक्सर उत्पत्ति से की जाती है वह एनुमा एलिश है। हम इसके बारे में बाद में और अधिक बात करेंगे, आप इसके बारे में फाइनगन में पढ़ेंगे। एनुमा एलिश एक बेबीलोनियन निर्माण कहानी है और इसमें आपके पास जीवित रहने के दो सिद्धांत हैं, अनुपचारित पदार्थ, तियामत और एप्सू। यह तियामत और एप्सू से है जो सभी देवताओं के माता और पिता थे, जिससे बेबीलोनियन देवताओं के इस पूरे पैन्थियन का जन्म हुआ और फिर आपको पूरा परिवार मिलता है और इसी से विकसित होता है। उत्पत्ति में, ईश्वर के अस्तित्व को माना गया है और आप इसकी तुलना बाइबिल से बाहर की पौराणिक कथाओं से करते हैं और इसमें बहुत बड़ा अंतर है क्योंकि उत्पत्ति 1:1 में आपने जो पढ़ा है वह सुंदर राजसी कथन है, "शुरुआत में भगवान ने आकाश और पृथ्वी की रचना की।" देखिए, यह आपको इस बारे में कुछ नहीं बताता कि ईश्वर कैसे अस्तित्व में आया। उसका अस्तित्व मान लिया गया है. "शुरुआत में, भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया।"

बी। एकेश्वरवाद पूर्वकल्पित है बी. "एकेश्वरवाद पूर्वकल्पित है," और उसी अर्थ में इसे सिखाया जाता है। मैं यह नहीं कहूंगा कि उत्पत्ति 1 में एकेश्वरवाद के बारे में कोई स्पष्ट सैद्धांतिक प्रकार की शिक्षा है, यह उस अर्थ में माना जाता है, यह सिखाया जाता है। मैंने पहले ही कई अलग-अलग देवताओं के बारे में बाइबिल से इतर पौराणिक कथाओं का उल्लेख किया है। आप युद्धों और षडयंत्रों, लड़ाइयों, देवताओं द्वारा एक-दूसरे को मारने और इस तरह की सभी चीजों के बारे में सीखते हैं। आपको इसका कोई संकेत नहीं है कि उत्पत्ति 1 में किसी अन्य देवता का उल्लेख नहीं है और ऐसा लगता है कि किसी अन्य देवता

की कोई संभावना नहीं है। “शुरुआत में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की।”

"एलोहिम" - एकवचन [भगवान] / बहुवचन [देवता] - संदर्भ अर्थ निर्धारित करता है अब दिलचस्प बात यह है कि हिब्रू में "भगवान" शब्द ही "एलोहीम" है। *एलोहीम* शब्द का अंत बहुवचन में होता है। यह एक बहुवचन संज्ञा रूप है जो ईश्वर को सूचित करता है। उस संदर्भ के आधार पर जिसमें वह शब्द प्रकट होता है, उसका एकवचन या बहुवचन में अनुवाद किया जा सकता है। देखिए *एलोहिम* शब्द का प्रयोग कनानियों के देवताओं के संदर्भ में भी किया जा सकता है। फिर आप इसे छोटे "जी" के साथ बहुवचन में अनुवादित करेंगे। लेकिन वह शब्द जब इज़राइल के भगवान के लिए प्रयोग किया जाता है, भले ही वह बहुवचन संज्ञा हो, एकवचन क्रिया और एकवचन संशोधक के साथ प्रयोग किया जाता है जो कि, आप कह सकते हैं, भाषा की संरचना के विरुद्ध जाता है। आप उस पहले कथन में एकवचन संशोधक के साथ एकवचन क्रिया चुनेंगे। "आरंभ में, भगवान ने बनाया" क्रिया एकवचन के रूप में कार्य कर रही है न कि बहुवचन क्रिया के रूप में। ऐसा नहीं है, "शुरुआत में देवताओं ने बनाया," भले ही संज्ञा बहुवचन रूप है। "शुरुआत में, भगवान ने बनाया।" यह एक विलक्षण क्रिया है और जब संज्ञा के साथ संशोधक जुड़े होते हैं। *एलोहिम* [भगवान] एकल संशोधक लेता है।

अब मैं देख रहा हूं कि मेरा समय समाप्त हो गया है।' मुझे बस एक संक्षिप्त बयान देने दीजिए और हम खारिज कर देंगे। कुछ लोग समझते हैं कि बहुलता ईश्वरत्व के भीतर बहुलता का संकेत देती है लेकिन इसे महिमा के बहुवचन के रूप में लेना बेहतर है। हम अगली बार भी जारी रखेंगे.

जेनिफ़र एगेबर्ग द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया